Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

रंगों और रेखाओं की परिणतियाँ : शमशेर की कविता और चित्रकला का अन्तर्सम्बन्ध

डॉ0 अनिल कुमार सिंह
एसोशिएट प्रोफेसर : हिन्दी–विभाग,
का0सु0 साकेत पी0जी0 कालेज, अयोध्या, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number : 340-344

Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 20 Sep 2020
Published : 30 Sep 2020

सारांश : शमशेर की कविताएं रूप, रस, गंध और स्पर्श के शब्द चित्र हैं। कविता और चित्रकला ये दोनों माध्यम उनकी चेतना में घुलकर एक हो जाते हैं। उनके भावों की लय उन्हें अपने में ढाल लेती हैं। शमशेर की प्रवृत्ति बिम्बों के चाक्षुष रूप को पकड़ने की रही है। मुक्तिबोध ने शमशेर को इसीलिए 'इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार' कहा था। शमशेर ने अपने हृदय में आसीन चित्राकार को पदच्युत कर उसके स्थान पर कवि को अधिष्ठित किया है। शमशेर वास्तविक भाव प्रसंग में उपस्थित संवेदनाओं का चित्रण करते हैं। वे लिखने को तो कविताएं लिखते हैं, लेकिन उनकी कविताएं धीरे–धीरे भावचित्रों का रूप ग्रहण करना प्रारंभ कर देती हैं। शमशेर ने चूंकि अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए भाषा के अलावा शुद्ध रंगों व रेखाओं का भी सहारा लिया था, इसलिए भाषा और चित्रकला की अनुभूति ओर अभिव्यक्ति उनके यहाँ घुली–मिली हैं।

बीज–शब्द : शमशेर, कविता, चित्रकला, इम्प्रेशनिज़्म, संवेदना–ज्ञान।

''कला से एक तरह से हम inner soul of the artist's personality देख सकते हैं। शब्द–ध्वनि, रंग और रेखा द्वारा एक तरह से जीवन को। I did apinting entirely for my ownself's pleasure. The eagerness to painting is transformed into words- paintings."[1]

शमशेर की मनोवृत्ति मूलतः चित्रकार की है। उन्होंने अपने चित्रकार न बन पाने की कसर को कविता में पूरा करने की कोशिश की है। चित्रकार बनने के लिए उन्होंने बाकायदा प्रशिक्षण भी लिया िा। उनका कवि चीजों को चित्र की शक्ल में पहले देखता है। उनकी कविता की चित्रमयता की बात अक्सर इसीलिए की जाती हैं उनके यहाँ शब्दों के अपने रंग हैं। शब्द और अर्थ उनकी कविता में अपनी रंगत लेकर आते हैं। शब्द ओर वाक्य का प्रयोग वे चित्रकार की भाँति करते हैं। अक्सर उनकी कविताएँ हमारे सामने पेंटिंग्स के रूप में साकार होती हैं। उनकी कविताएं रूप, रस, गंध और स्पर्श के शब्द चित्र हैं। कविता और चित्रकला ये दोनों माध्यम उनकी चेतना में घुलकर एक हो जाते हैं। उनके भावों की लय उन्हें अपने में ढाल लेती हैं। वे शमशेर के 'राग' में ढल जाती हैं। 'एक नीला आईना बेठोस,' 'उषा', 'एक पीली शाम', 'सींग

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

और नाखून', 'शिला का खून पीती थी' आदि कविताएँ बिम्बों के एक अलग संसार की सर्जना है। इन बिंबों में कविता और चित्रकला आपस में घुलकर शमशेर की संवेदना के सांचे में ढल गई हैं। पिकासो के एक अलबम को देर तक उलटने–पलटने के बाद उन्होंने 'पिकासोई कला' पर कविता लिखी–

कला–आत्मरूप यहीं कूची कोयला पत्थर
अंगड़–खंगड़ चमड़ा चीनी मिट्टी।
हड्डी लकड़ी कागज कुछ भी कहीं भी
सकल वर्ग सर्ग में जो है
सब कुछ बनाकर दृष्टि एक
मार्मिक–इतिहास–भिदी अद्वितीय
अत्यधिक निजी अनुशासन की सीमा थी
सदा एक नए समय की गर्म सांस
अपनी–सी ही बहुत वह कला पिकासोई।[2]

शमशेर के यहाँ कला का अर्थ 'जीवन की तुला में प्राणों का संयमन' है। क्योंकि वे किसी भी कला को जीवन से बाहर नहीं देखते। उनके लिए जीवन ही सब कुछ है। कविता में भाव तथा रंग इसी जीवन से आयेंगे। शमशेर की प्रवृत्ति बिम्बों के चाक्षुष रूप को पकड़ने की रही है। मुक्तिबोध ने शमशेर को इसीलिए 'इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार' कहा था। वे लिखते हैं ''शमशेर की मूलवृत्ति एक इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार की है। इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार अपने चित्र में केवल उन अंशों को स्थान देगा जो उसके संवेदना–ज्ञान की दृष्टि से, प्रभावपूर्ण संकेत शक्ति रखते हैं। वह दृश्य चित्र में उन्हीं अंशों को स्थान देता है जो उसके संवेदनाज्ञान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण, अतः प्रगाढ़, प्रभावपूर्ण अंग हैं। केवल कुछ ही ब्रेशेज में वह अपना काम करके दृश्य के शेष अंशों को दर्शक की कल्पना के भरोसे छोड़ देता है। दूसरे शब्दों में, इम्प्रेशनिस्ट चित्रकार, दृश्य के सर्वाधिक संवेदनाघात करने वाले अंशों को प्रस्तुत करेगा और वह मानकर चलेगा कि यदि वह संवेदनाघात दर्शक के ह्रदय में पहुँच गया तो दर्शक अचित्रित शेष अंशों को अपनी सृजनशील कल्पना द्वारा भर लेगा।

तथ्य यह है कि शमशेर ने अपने ह्रदय में आसीन चित्राकार को पदच्युत कर उसके स्थान पर कवि को अधिष्ठित किया है। शमशेर वास्तविक भाव प्रसंग में उपस्थित संवेदनाओं का चित्रण करते हैं। वे लिखने को तो कविताएं लिखते हैं, लेकिन उनकी कविताएं धीरे–धीरे भावचित्रों का रूप ग्रहण करना प्रारंभ कर देती हैं। इसका कारण यह है कि पदच्युत चित्रकार के जिस सिंहासन पर कवि विराजमान है वह सिंहासन अपनी जादुई शक्ति से कवि को बांध्य करता है कि वह इम्प्रेशनिस्ट टेकनीज ओर मनोवृत्ति अपनाए और इस प्रकार, इम्प्रेशनिस्ट चित्राकला के मूल नियमों को काव्यकला में गुप्त रूप से संस्थापित करें।''[3]

शमशेर का मानसिक अवबोध चित्रकार की टेकनीक अपनाता है। एक चित्रकार की तरह वे अपने शब्दों में रंग भरते हैं। उनकी एक प्रसिद्ध कविता है 'होली : रंग और दिशाएँ'

जँगलें जालियाँ,
स्तंभ
धूप के संगमर्मर के,
ठोस तम के।

कँटीले तार हैं

गुलाब बाड़ियाँ।[4]

यह कविता एक एब्सट्रैक्ट पेंटिंग के रूप में अपनी समग्रता में पूरी उतरती है। शमशेर की कविताओं में सूक्ष्म संवेदनाओं के बिखरे गुणचित्रों को बिम्ब का रूप दिया गया है। उनकी कविता में ''एक दरिया उमड़कर पीले गुलाब का/चूमता है बादलों के झिलमिलाते स्वप्न जैसे पांव, 'उषा के जल में सूर्य का स्तंभ हिल रहा है।' शमशेर ने चूंकि अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए भाषा के अलावा शुद्ध रंगों व रेखाओं का भी सहारा लिया था, इसलिए भाषा और चित्रकला की अनुभूति ओर अभिव्यक्ति उनके यहाँ घुली–मिली हैं। वे सिर्फ कुछ ही शब्दों में हमारे सामने एक दृश्य उपस्थित कर देते हैं लेकिन उनका ध्यान उस दृश्यचित्र की लय पर ज्यादा संक्रेन्द्रित रहता है अतः वह कविता हमारे मन में एक चाक्षुष बिम्ब की तरह उतरती है। उनकी एक कविता है–

एक आदमी दो पहाड़ों को कुहनियों से ठेलता
पूरब से पश्चिम को एक कदम से नापता
बढ़ रहा है
कितनी ऊँची घासें चाँद–तारों को छूने–छूने को है–
जिनसे घुटनों को निकालता वह बढ़ रहा है।
अपनी शाम को सुबह से मिलाता हुआ
फिर क्यों
दो बादलों के तार
उसे महज उलझा रहे हैं?[5]

कविता एक चाक्षुष बिम्ब के रूप में हमारे सामने उपस्थित होती है। लेकिन शमशेर की कला इस भौतिक बिम्ब को भी अपार्थिवता के धरातल पर उठा ले जाती है। यहाँ बिम्ब 'कालोपरि' हो गया है। देश और काल दोनों में उलझा हुआ मगर दोनों से परे। यह काम एक बड़ा कलाकार ही कर सकता था।

'घनीभूत पीड़ा' कविता में शमशेर को अपने शब्द चित्रों से संतोश नहीं हुआ। उन्हें कविता के साथ रेखांकन देने की जरूरत भी महसूस हुई थी क्योंकि उनका उद्देश्य उस 'घनीभूत पीड़ा' की पूर्णतम अभिव्यक्ति का था। शमशेर अक्सर अपनी कविताओं में विभिन्न कला माध्यमों के बीच आवाजाही करते दिखाई पड़ते हैं।

शमशेर के चित्रकार होने का उनकी कविता पर यह प्रभाव पड़ा है कि उनकी कविता में गाढ़े चटख और कई बार मद्धिम और उदास रंगों वाले बिम्बों की संख्या अधिक है। उन्होंने संगीत के प्रभाव को भी चित्रों में ढालने की कोशिश की है। उनकी एक कविता है–

लुटी–मीठी बाँसुरी की धुन।
भूल सपनों की लिए बैठी
कौन चिलमन में
मौन रिमझिम की,
आँसुओं–लिपटी?
फिर कहाँ वह मन–कली

ठुनकी, खिली, ठहरी, झुकी मद–भार, अलसाई, गिरी,
खोई , कहीं सोई
मौन रिमझिम के
स्वप्न–चिलमन में
बाँसुरी की धुन–सरीखी
(सुनी–जानी दुखों की सखि–सी
आत्मा की
लुटी मीठी मौन ध्वनि सी)[6]

इस कविता में बाँसुरी की ध्वनि तरंगों के उतार–चढ़ाव को शब्दों में व्यंजित करने की कोशिश की गई है। इस कविता में नाद सौंदर्य के साथ चित्रमय प्रस्तुति इस कविता में की गई है। इसी तरह की उनकी एक अन्य कविता है 'रेडियो पर एक योरोपीय संगीत सुनकर'–....

मैं
सुनूँगा तेरी आवाज़
पैरती बर्फ की सतह मे तीर–सी
शबनम की रातों में
तारों की टूटती
गर्म
गर्म
शमशीर–सी–
तेरी आवाज
खाबों में घूमती–झूमती
आहों की एक तसवीर सी.....[7]

इस कविता में भी ध्वनि तरंगों की शब्द में बांधने की कोशिश की गई है। इस कविता में आह सिर्फ भाव नहीं बल्कि एक तस्वीर की तरह है। यह 'आह' इस कविता में महसूस ही नहीं होती दिखती भी है।

असल में शमशेर दृश्य जगत की उस लय की खोज में हैं जो सर्वत्र विद्यमान है फिर भी हमसे कहीं खो जाती हैं। इसकी खोज में उनमें विभिन्न कला माध्यम घुलमिल जाते हैं। उनकी एक कविता है 'विजय सोनी के चित्र'–

....

और जहां मिलते हैं वह एक–
कैनवस है
जिसे हम छू नहीं सकते
क्योंकि उसे हम जी रहे हैं
यह एक माध्यम है
जिसे रंग मिल–मिल के पकड़ने के लिए
खोए जा रहे हैं

यहाँ जो कुछ ठोस है
वह धड़क रहा है
और जहाँ धड़कन है वहाँ
खामोशी है
दम साधे हुए।
आज की चीख–पुकार में
एक बहुत कोमल तान
खो गई है।
उसे पाना है।[8]

शमशेर की कविता में रंगों ओर रेखाओं की परिणति उस बहुत कोमल तान को पा लेने में है जो खो गई है। इसी में उनकी कला की सार्थकता है।

संदर्भ

1. कवियों का कवि शमशेर, रंजना अरगड़े से बातचीत, पृष्ठ 225
2. पिकासोई कला, प्रतिनिधि कविताएं, पृष्ठ 12
3. शमशेर : मेरी दृष्टि में, मुक्तिबोध, शमशेर, पृष्ठ 12
4. प्रतिनिधि कविताएं, पृष्ठ 124
5. वही, पृष्ठ 116
6. उदिता : अभिव्यक्ति का संघर्ष, पृष्ठ 77
7. कुछ कविताएं, पृष्ठ 6
8. इतने पास अपने, पृष्ठ 35